DPS VASANT KUNJ

E-MAGAZINE - 2019

“If there is a book that you want to read, but it hasn’t been written, then you must write it.”

– Toni Morisson

An e-magazine is a great forum for the students to showcase their talent as writers and express themselves in a distinct way.

To inspire and inculcate the reading and writing skills at an early age, students are being encouraged to contribute to the e-magazine by writing essays, poems, short stories etc. and come together along with the editorial board to make it a success.

THE ACCIDENTAL POEM

Two girls came to class today

They said, ‘We have an activity for you’

And we said, ‘Hooray! Hooray!’

Please write for the school magazine

A poem, a dialogue, a story about a queen

Bring it by tomorrow noon

If it gets published, it’s a boon.

I came back home, very excited

The thought of my name in print

Made me feel delighted.

I was so confused, I did not know

What to write

So many thoughts swirled in my head

It really blurred my sight.

I went to my sister for help,
But she shooed me away
As she was studying, she angrily said,
Go to another room and play.

Das was not of much help
He told me to write about the moon
It was such a difficult topic for me
I said, I'll finish it by tomorrow noon.

All this thinking made me so tired
I really wanted to go to bed
But my assignment was incomplete
No thoughts were left in my head

Then I had a brainwave
I thought, let me turn this in
If it doesn't work out
It can go in the bin.

I worked very hard for this poem
I wrote it just for you
I like it very much
I hope you like it too.

Adya Tiwari
IV-E

NATURE

Corals and seas,

Flowers and bees,

Oh, say goodbye,

Nature's destroyed

We humans have done it,

There's nowhere to stand or sit

Another 50 years and all's gone

Oh dear, look at what we've done

If this is nature,

Think about our future

What'll happen to us

Our kids will make our fun and fuss

That we're so careless

That Earth's become so lifeless.

ALISHA KANWAR

V-E

संसार में फैलते जल संकट और उसके संरक्षण के महत्तव काक बताती एक कविता ।

मैं 'जल' जीवन दायक कहलाता

आसमान से, बादलों पर चढ़ कर आता
बिन मोल का मैं, अनमोल बन जाता ,
सारे संसार की जब प्यास बुझाता
मैं जल, जीवन दायक कहलाता ।

सीचं बीजों को, शक्ति बढ़ाता
छोटे से पौधो को विशाल वृक्ष बनाता,
झरना, पोखर, नदी, तालाब, सागर
मेरे रूप से जुड़े, इंसान गाँव –शहर बसाता ।

जंगल, पौधे, खेत – खलिहान
पशु–पक्षी, हर प्राणी हर इंसान,
सारे संसार को देता जीवन दान
बिना पक्षपात, करता मैं जन– कल्याण ।

आसमान से बरसता मैं एक वरदान
ना समझे महत्त्व मेरा यह इंसान,
व्यर्थ बर्बादी कर, करें मेरा अपमान
मूर्खता इंसान की, संसार का नुकसान।

वर्षो से बर्बाद कर, उम्र मेरी घटाता
हरी–नीली पृथ्वी का नीला रंग मिटाता,
आज के फेर में, कुटिल इंसान
अपने बच्चों का भविष्य चुराता ।

प्यास मरेगा संसार, हर ओर रेगिस्तान पाओगे
लाखों वर्ष पुरानी पृथ्वी, कुछ वर्ष में गवाओगे ,
मिलकर करों फैसला, कैसे मुझे बचाओगे
सर्तक जो अब ना हुए, जल्द पछताओगे

वेदांशी शर्मा
तीसरी – बी

सपने

मेरी अखियाँ सहज मुस्कुराती, मन की बगिया लहराती
परियों के संग मैं खेलती, कभी परियों की रानी बन जाती
कभी पर्वत शिखर पर, तो कभी बादलों में छिप जाती
आते जाते सब रंगों पर, अपना हक जताती
निडर, निर्भय, निर्भीक मन से, कहीं भी उड़ जाती
मैं बाबुल की प्यारी गुड़िया, नाज़ो सी इठलाती
खुली आँखो के इन सपनों पर, मन ही मन इतराती
खुशियों भरे इस जहाँ में, हर्षित पुलकित हो जाती

सुना है सब लाडलियों के सपने एक से होते हैं
लेकिन कुछ के ये निर्मम वक्त पूरा नहीं होने देते हैं
है कौन हैं जो लाडलियों के सपने तोड़ रहे हैं
उन सब से जीने का हक उनसे छीन रहें हैं
आओ इस निर्ममता को जड़ से हम मिटाएँ
उन अबोध निर्मल हाथों के संगी हम बन जाएँ
दें वह परिवेश उनको और उनमें ये आस जगाएँ
इन सपनों से भी सुदंर वे एक संसार रचाएँ

सुभांशी झा
पाँचवी 'बी'

पानी

सह हमें समझाए नानी,
नही व्यर्थ बहाओ पानी ।
हुआ समाप्त अगर धरा से,
मिट जाएगी ये जिंदगानी

नही उगेगा दाना–दुनका
हो जायेंगे खेत वीरान
उपजाउ जो लगती धरती
बन जायेगी रेगिस्तान

हरी–भरी जहाँ होती धरती
वहीं आते बादल उपकारी
खूब गरजते, खूब चमकते
और करते वर्षा भारी

हरा – भरा रखो रस जग को
वृक्ष तुम खूब लगाओ ।
पानी अनमोल रत्न
तुम एक–एक बूँद बचाओ ।

वल्लरी वत्स
पाँचवी 'ए'